भारत छोड़ों आन्दोलन एवं अभिजात वर्गः अर्न्तविरोध का एक अध्ययन

डॉ. राघव कुमार

आधुनिक बिहार के इतिहास में उड़ीसा और छोटानागपुर के साथ बिहार का एक पृथक प्रांत के रूप में 22 मार्च 1912 को निर्माण किया जाना बिहारवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। बिहार के निर्माण के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर इसकी अपनी पहचान बनी और नये बिहार ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों में उल्लेखनीय ढंग से भाग लेना शुरू किया। बिहार के राष्ट्रीय आंदोलन में खासकर 1912–1939 के दौरान समाज के विभिन्न तबकों ने भागीदारी निभायी, लेकिन नेतृत्व मुख्य रूप से अभिजात वर्ग–धनी किसानों, महाजनों, धनी रैयतों, वकीलों एवं शिक्षकों के ही हाथ में रहा। अनेक ऐतिहासिक तथ्यों से यह साबित हो चुका है कि चाहे चम्पारण सत्याग्रह हो, चाहे असहयोग आंदोलन या यों कहें कि सविनय अवज्ञा आंदोलन, बिहार के व्यापक परिप्रेक्ष्य में इन आंदोलनों को गरीब और खेतिहर मजदूरों से कोई खास लेना देना नहीं था। अगर बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन की संरचना और नेतृत्व के वर्ग चरित्र का विश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय आंदोलन की प्रक्रियाओं पर अभिजात वर्ग का प्रभुत्व था। स्वतंत्रता आंदोलन की वाहक कांग्रेस पार्टी की नेतृत्वकारी समितियों की जातिगत संरचना को यदि स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न जातियों का पैमाना माना जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि पिछड़ी जातियाँ इस आंदोलन से कमोवेश अलग–थलग ही रही थी फिर उनकी भागीदारी काफी कम थी।